

# हैसियत वाले नर की गंध से तंत्रिकाएं बनती हैं

अल्फा नर यानी हैसियत वाले नर का मतलब होता है जानवरों के किसी झुंड में वह नर जिसका झुंड पर दबदबा हो। कई जंतुओं में इस तरह की व्यवस्था देखी गई है। अब नए अनुसंधान से पता चला है कि इस नर द्वारा छोड़े गए कुछ रसायन मादा जंतुओं के दिमाग के दो हिस्सों में नई तंत्रिकाओं के निर्माण को उकसाते हैं।

यह तो पहले से पता है कि मूत्र में ऐसे रसायन (फेरोमोन्स) काफी मात्रा में होते हैं और ये रसायन जंतुओं को अपना प्रजनन साथी पहचानने व चुनने में मदद करते हैं। लिहाजा कनाडा के सेलगरी विश्वविद्यालय के सेमुअल वाइस ने यह जानने का प्रयास किया कि इन रसायनों का दिमाग पर क्या असर होता है। और इस प्रयोग के लिए उन्होंने चूहों का उपयोग किया।

कुछ मादा चूहों को उन्होंने एक सप्ताह के लिए मूत्र सनी मिट्टी में रखा। जिन मादाओं का संपर्क अल्फा नर के मूत्र से हुआ था उनमें दिमाग के दो हिस्सों में नई तंत्रिका बनने की दर में 25 प्रतिशत वृद्धि हुई। जिन मादा चूहों को साफ-सुथरे पिंजड़ों में रखा गया था या अन्य मादाओं अथवा

गैर अल्फा नरों के मूत्र के संपर्क में रखा गया था उनमें इस तरह की कोई वृद्धि नहीं देखी गई। नेचर न्यूरोसाइन्स में प्रकाशित इन निष्कर्षों से लगता है कि अल्फा नर के फेरोमोन्स मादा चूहों में तंत्रिका निर्माण को बढ़ावा देते हैं।

तंत्रिकाओं की उक्त वृद्धि दिमाग के जिन दो हिस्सों में देखी गई, वे हैं हिप्पोकैम्पस और घ्राण बल्ब। हिप्पोकैम्पस वह हिस्सा है जिसका सम्बंध सीखने व याददाश्त से है जबकि घ्राण बल्ब का सम्बंध गंध की पहचान से है। वैसे तो इन दोनों हिस्सों में आजीवन तंत्रिकाएं बनती रहती हैं। मगर दोनों में एक साथ वृद्धि होना दर्शाता है कि फेरोमोन्स से मिलने वाले संकेत दोनों को एक साथ प्रभावित करते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि प्रजनन साथी के चयन में गंध की महत्वपूर्ण भूमिका है।

अभी यह कहना मुश्किल है कि क्या इन्सानों में भी ऐसी प्रक्रिया होती है हालांकि ठीक उसी प्रकार के ग्राही इन्सानों में पाए जाते हैं। कुल मिलाकर इतना ही कहा जा सकता है कि गंध एक महत्वपूर्ण संवेदना है जिसके महत्व को पूरी तरह सराहा नहीं गया है। (स्रोत विशेष फीचर्स)